International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 71-73

अमृतराय की लेखकीय सजगता और कलम का सिपाही

प्रियंका यादव

व्याख्याता –हिन्दी राजकीय महाविद्यालय बहरोड़, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

अमृतराय एक सजग सर्जक थे। वे जितने सजग अपने दृष्टिकोण के प्रति थे उतने ही सजग अपनी सृजन –प्रक्रिया के प्रति भी थे। उनका सृजन विविधमुखी है इसलिए सृजन – प्रक्रिया के स्तर पर उन्हें विभिन्न प्रकार के रचना रूपों से अलग–अलग स्तर पर संघर्ष करना पड़ा। मानसलोक में भावन व्यापार के स्तर से लेकर अभिव्यक्ति के समस्त अभिगमों के सफलता पूर्वक निर्वहन तक में उनका कलाकार बराबर सजग रहा है। बाह्य जगत के यथार्थ को कल्पनालोक का संस्पर्श देकर, शिल्प को साज –संवार कर अभिव्यक्त की गई कलाकृति में उन्होंने सृजन – प्रक्रिया के नये आयाम रचे है। यह उनकी सृजन–शक्ति का ही चमत्कार है कि जिन–जिन विधाओं को उनकी लेखनी ने छुआ है वे श्रेष्ठता के शिखर को छू गई हैं।

अनुभूति के स्तर पर जहाँ अमृतराय की रेखाएँ सूक्ष्मतर होती गई हैं, वहीं अभिव्यक्ति के स्तर पर भी यथार्थ के विविध आयाम उनकी रचनाओं में मिलते हैं। अपने व्यापक यथार्थबोध के आधार पर अमृतराय ने समाज के विभिन्न स्तरों और अवस्थाओं को बहुत करीब से देखा और चित्रित किया है। अमृतराय की सृजन– प्रक्रिया के बहुआयामी तेवर ' कमल का सिपाही' में देखने को मिलते है। उन्होंने प्रेमचन्द के जीवन की महा–संघर्ष गाथा को कलात्मक आधार देकर जो रचनात्मक कीर्तिमान खड़ा किया है वह अद्वितीय है। अपनी सृजन – प्रक्रिया के सम्बन्ध में उन्होंने ' कलम का सिपाही' की भूमिका में लिखा है – ''कभी तो मुझे कुछ झुंझलाहट भी महसूस हुई, लेकिन अकसर मैं मुस्कराकर रह गया । मैं कहना चाहता था कि यह मेरी ही चीज़ है जो मैं लिख रहा हूँ, कि यह भी एक उपन्यास ही है जिसका नायक प्रेमचन्द नाम का एक आदमी है, फ़र्क बस इतना ही है कि यह आदमी मेरे दिमाग की उपज नहीं है, हाड़–मांस का एक पुतला है जो धरती पर डोल चुका है और समय की पगडंडी पर अपने पैरों के कुछ निशान छोड़ गया है, उसको मारने– जिलाने की, जैसे मन चाहे तोड़ने –मरोड़ने की आजादी मुझे नहीं है, घटना – प्रसंगों का आविष्कार करने की छूट मुझे नहीं है..... एक न एक संयम– अनुशासन हर सृजन के साथ लगा हुआ है। [1]

कलम का सिपाही : प्रेमचन्द के जीवन चरित्र की उपलब्धियाँ

हिन्दी जीवनी – साहित्य का आरम्भ बड़ा निराशा जनक था। अमृतराय से पूर्व और समानान्तर जो जीवनी – लेखन हो रहा था उसमें ज्यादातर महात्मा गांधी और अन्य महापुरूषों, संतों, नेताओं की जीवनियां थी। इन जीवनियों में भी अधिकांश सीधे– समाट जीवन –वृतांतो से भी होती थी। साहित्याकारों के जीवन पर लिखने का उद्यम ज्यादा नहीं किया गया। जो जीवनियाँ लिखी गयी वे ज्यादा प्रभावशाली नहीं थी।

स्वातन्त्र्य काल इस दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इस काल में जीवनी लेखन की नई ज़मीन और नई संभावनाओं की तलाश की गई। जीवनी –रचना की नई भावभूमि रची गई। यहाँ जो नए प्रयोग हुए उन्हें लक्षित करके डॉ. भगवत शरण भारद्वाज ने लिखा– जीवनी साहित्य का भवन अनुभूत और साक्षात्कृत सत्यों की आधार शिला पर प्रतिष्ठित है। जीवनी में स्वप्न जिस सीमा तक यथार्थ में ढ़ल चुका है, अभिव्यक्त हुआ है, आस्वादित हुआ है, उसी सीमा तक जीवनी–साहित्य उसका वाहक बनता है। अध्यारोपित, आगन्तुक और अप्राकृत हृदय – सत्य को अपनी सम्पत्ति का उपादान बनाने के लिए वह प्रस्तुत नहीं । अनुभूति की सीमा में न अँटने वाला यथार्थ जीवनी–साहित्य –सृष्टा की दृष्टि में मिथ्या से भिन्न नहीं होता । जीवन के निकष पर अपनी विशुद्धि प्रमाणित न करा पाने वाला सत्य जीवनी – साहित्य के लिए अभिनन्दनीय नहीं होता। [2]

अमृतराय एक प्रौढ़ एवं श्रेष्ठ जीवनीकार के रूप में स्वीकृत हैं। उन्होंने प्रेमचन्द के व्यक्तित्व की सारी सरलता, सरसता,कोमलता और करूणा का साकार चित्रण किया है। उन्होंने प्रेमचन्द को एक संवेदनशील सिपाही के रूप में देखा है। इस आधार पर इस जीवनी का शीर्षक ' प्रेमचन्द – कलम का सिपाही ' बड़ा सटीक और सारगर्भित है। प्रेमचन्द की रचनाओं में किसान– मजदूरों और शोषितों – पीड़ितों के जीवन की वास्तविक गाथा है। प्रेमचन्द का स्वयं का जीवन इस तरह के जीवन से जुड़ा हुआ था इस नाते प्रेमचन्द उसके बाहर– भीतर से पूरी तरह परिचित थे। उनकी रचनाओं में जीवन के जो इतने अंतरंग और मार्मिक दृश्य उपस्थित हैं उनके पीछे प्रेमचन्द की गहरी जीवन– दृष्टि छिपी हुई है उसी की गहराई से पड़ताल करते हुए अमृतराय ने लिखा है– प्रेमचन्द की सरलता सहज है। उसमें कुछ तो देश की पुरानी मिट्टी का संस्कार है, कुछ नैसर्गिक शील है, संकोच है, कुछ उसकी गहरी जीवन दृष्टि है और कुछ उसका सच्चा आत्मगौरव है जो किसी तरह से आत्म– प्रदर्शन या विज्ञापन को उसके नजदीक घटिया बना देता है। नहीं, वह कस्तूरी मृग नहीं है जिसे अपने भीतर की कस्तूरी का पता न हो । उसे पता है कि उसके भीतर ऐसा भी कुछ है जो मूल्यवान है, उसका अपना है, नितान्त अपना, मौलिक विशेष। [3]

सीधे– सपाट जीवन– वृतांत और घटनाओं की कमवार सूची को ही' जीवनी' के नाम से परोसने वाले जीवनीकारों को चुनौती देते हुए' अमृतराय ने पात्र के युग जीवन–यथार्थ, सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ उसके संघर्ष, सामाजिक परिवेश और परिस्थितियों के दबाव में मनुष्य–चेतना के स्तर को अन्वेषित–विश्लेषित करने को जीवनी–रचना की अनिवार्य शर्त के रूप में स्थापित किया। अमृतराय के इस अवदान को रेखांकित करते हुए डॉ शिवप्रसाद सिंह ने लिखा है– अमृतराय ने निसन्देह यह सब एक बड़ी आत्मीयता और महान् कर्त्तव्य – बुद्धि से प्रेरित होकर किया है, किंतु इसी के साथ एक खतरा, प्रत्यवाय भी चिपका हुआ था। नजदीकी व्यक्ति प्रायः ही इस खतरे के शिकार हो जाते है। यह खतरा है अतिमूल्य का । यह दुहरा होता है। एक तो निकटता के कारण जीवनीकार व्यक्ति को बहुत बढ़ा चढ़ा कर चित्रित करता है, दूसरे उसकी त्रुटियों ओर कमजोरियों को तोप–ढ़ाँक कर उपस्थित करता है या यदि ऐसा न कर सके तो उन्हें दार्शनिक जामा पहनाकर बड़ी बात का रूप देने की कोशिश करता है। यह दौहरा खतरा अमृतराय के सामने भी था लेकिन वे अपनी

तटस्थता के सहारे ऐसे तमाम खतरों से बच गये । [4]

प्रेमचन्द के जीवन को अमृतराय ने सीधे –सरल ढ़ंग से सिलसिलेवार प्रस्तुत नहीं किया है वरन 'एक सर्जक की तरह उन्होंने प्रेमचन्द के युग और जीवन की औपन्यासिक पुनर्रचना की है। यह रचना जीवनी होते हुए भी जीवनी नहीं है, एक उपन्यास है। इसकी रचना में अमृतराय ने अपने सम्पूर्ण सृजनात्मक विवेक और रचनात्मक कौशल का उपयोग किया है। उन्होंने प्रेमचन्द के विभिन्न लोगों को लिखे पत्रों के आधार पर प्रेमचन्द के जीवन को विश्लेषित किया है। प्रेमचन्द डायरी नहीं लिखा करते थे और अपने पत्रों को संभाल कर रखने की भी उनकी आदत नहीं थी। इसलिए अमृतराय को इस ओर से भी कोई मदद नहीं मिल पायी । डायरी और पत्र जीवन चरित्र लेखन में न केवल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है वरन् कई मायनों में निर्णायक भूमिका भी निभाते हैं। इसलिए दयानारायण निगम और अन्य परिचितों से जो भी पत्र मिले उनका अमृतराय ने बहुत कौशल से उपयोग किया है।

इन पत्रों के आधार पर चरित्र लेखन ने प्रेमचन्द के चरित्र को एक महान आकार दिया है। प्रेमचन्द की सहिष्णुता, सरलता तथा राष्ट्रभक्ति का जो चित्र अमृतराय ने उकेरा है वह अद्भुत है –

प्रेमचन्द का पूरा जीवन संघर्ष और कष्टों से भरा रहा पर उन्होंने कभी भी दुख को सुख पर हावी नहीं होने दिया । अमृतराय ने जीवनी में लिखा है – मास्टरी उनकी जीविका थी और लिखना उनका जीवन। जीविका जब नहीं रही तब भी जीवन अपनी उसी धीर गंभीर चाल से चलता रहा, क्योंकि वही, एकमात्र वहीं, उसकी खुशी, उसका संतोष..... शायद यही उसकी कमजोरी थी और यही उसकी सबसे बड़ी ताकत । उसके जिन्दगी में बहुत दुख देखा था और शायद उस दुख को सहन करने के लिए ही प्रकृति ने उस उन्मुक्त हँसी का कवच दे दिया था। [5]

प्रेमचन्द का जीवन दूसरों के लिए समर्पित था। वे परदुखकातर थे इसलिए दूसरों के लिए जीना उन्हें सदैव अच्छा लगता था। यों देखने में प्रेमचन्द कुछ–कुछ समाज भीरू लग सकते है क्योंकि ज्यादा मेल– मुलाकात में उनका विश्वास नहीं था। यह भी हो सकता है कि बाहर की दौड़–धूप से अधिक अच्छा उन्हें घर बैठकर लिखने में संतोष होता हो। पर इसमें कोई संदेह नहीं कि वे अपने से अधिक दूसरों के लिए जिए हैं। अमृतराय ने लिखा है – ''सबकी अपनी–अपनी बात है, दुनिया को उन सब से कुछ सरोकार नहीं । जो मालदार है, वह किसी का घर नहीं भर देता और दरिद्र है, वह किसी का छीन नहीं लेता ।..... अपने लिए तो जानवर भी जी लेता है, जो दूसरों के लिए जिए, वही तो असल आदमी है।[6]

अमृतराय ने इस जीवनी में यह भी दिखाया है कि प्रेमचन्द का जीवन एकांतिक साधना में ही लीन नहीं है। ' प्रेमचन्द श्रमिक जीवन के क्रांतिकारी दर्शन यानी विश्व के सर्वाधिक वैज्ञानिक दर्शन मार्क्सवाद से प्रेरित थे। वे प्रगतिशील चिन्ताधारा के हाथ मजबूत करने के लिए अज्ञान रूपी राक्षशी शक्तियों के विरूद्ध लेखनी की बन्दूक लेकर आगे बढ़ने वाले सिपाही थे।' वे एक सिपाही थे जो सामाजिक जीवन में भी क्रांति चाहते थे। समाज में फैली हिंसा,छुआछूत, नारी व दलित उत्पीड़न आदि रोगों से ग्रस्त समाज का शीघ्र नष्ट हो जाना ही वे उचित मानते हैं। उनके चरित्र की इन विशेषताओं का उल्लेख करते हुए अमृतराय ने लिखा है – जो समाज अकारण किसी को इतना भयानक दुख पहुँचा सकता है – एक तरफ स्त्रियों को , एक तरफ अछूतों को – वह सचमुच अभिशप्त है और अच्छा है कि कल के मरते आज ही इसका जनाजा निकल जाए। [7]

प्रेमचन्द धार्मिक आडम्बर और धार्मिक कट्टरपन के बड़े विरोधी थे। उन्होंने धर्म के नाम पर शोषण और ठगी करने वाले पण्डे–पुरोहितों तथा मुल्ले –मोलवियों को जीवन पर्यन्त फटकार लगाई । उनके जीवन की इस निडरता को व्यक्त करते हुए अमृतराय ने जीवनी में लिखा है– ''अगर हममें इतनी शक्ति होती तो हम अपना सारा जीवन हिन्दू जाति को पुरोहितों, पुजारियों, पण्डों और धर्मोपजीवी किटाणुओं से मुक्त कराने में अर्पण कर देते। हिन्दू जाति का सबसे घृणित कोढ़, सबसे लज्जाजनक कलंक यही टकेपंथी दल है जो एक विशाल जोंक की भांति उसका खून चूस रहा है..... जब तक यहाँ एक दल, समाज की भक्ति, श्रद्धा और अज्ञान – अंधविश्वास से अपना उल्लू सीधा करने के लिए बना रहेगा, तब तक हिन्दू समाज कभी सचेत न होगा। [8]

प्रेमचन्द का युग और साहित्य देश की संघर्षशील जिजीविषा, उसकी कर्मचेष्टाओं और अभिव्यक्तियों को सही ढ़ग से प्रतिबिम्बित करता हैः राष्ट्र की आन्तरिक शक्ति तथा बाह्रा कर्म–संकुलता और बेचैनी को मुखर करता है। व्यक्ति के माध्यम से समाज के मनः स्तर को चित्रित करता है। अमृतराय ने इसका बहुत मनोवैज्ञानिक विवेचन करते हुए लिखा है – राजनीति में आजकल खासा सन्नाटा है, बस दांव –पेंच की लड़ाई चल रही है। सरकार अपनी भेदनीति से राष्ट्र के टुकड़े कर देना चाहती है और राष्ट्र अपनी आत्मा और अपनी एकता की रक्षा में लगा है। हवा में आजकल एक ही चर्चा है..... साम्प्रदायिक मताधिकार।

'कलम का सिपाही' जीवनी में अमृतराय ने प्रेमचन्द को नायक के रूप में स्थापित कर उसके समग्र जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला है। अपने पिता के नाते नहीं वरन् एक मनुष्य के नाते उनके चरित्र में अच्छाइयों और बुराइयों को भी उभारा है। प्रेमचन्द जीवन और साहित्य दोनों में आदर्शवादी थे। किन्तु ज्यों–ज्यों जीवन के यथार्थ से उनका सामना हुआ और राजनीति से जैसे–जैसे उनका मोहभंग होता गया उनके व्यक्तित्व पर से आदर्शवाद का आवरण हटने लगा। उनके साहित्य और जीवन में यथार्थ मुखर होने लगा। यही नहीं उन्होंने जैनेन्द्र जी को एक पत्र लिखकर साहित्य में यथार्थवाद की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

प्रेमचन्द की आत्मा भारतीय किसान की सच्ची हमदर्द है। कलम का यह सिपाही वास्तव में भारतीय किसान है जो न केवल किसानों से शीघ्र घुलमिल जाता है वरन् वह खुद को भी इन्हीं का एक हिस्सा समझता है। वह किसान की तरह मेहनत और श्रम में अधिक विश्वास करता है व्यर्थ की बकवास में कम । इसी में इन्हें संतोष मिलता है।

अमृतराय ने प्रेमचन्द के जीवन की मार्मिकता को बड़ी गहराई से पकड़ा है। जीवनी में ऐसे अनेक प्रसंग आए है जहाँ प्रेमचन्द के भीतर की करूणा फूट पड़ी है। जीवनी में आए ऐसे मार्मिक प्रसंगों के चित्रण में अमृतराय के कलाकार ने कौशल का परिचय दिया है। बकौल प्रेमचन्द अमृतराय ने लिखा है– '' शरीर थोड़ा छीज रहा है जरूर लेकिन शरीर का छीजना मन का छीजना तो नहीं । उसमें तो आज भी वही जोश है, हौंसला है, गुस्सा है, मुहब्बत है, नफ़रत है, झुंझलाहट है, दर्द है, सब कुछ तो वही है। कहीं तो कोई बासीपन नज़र नहीं आता, वही तड़प, वही भूख नयी बातों के लिए, वहीं अम्लान जिज्ञासा सत्य की, वही विद्रोह जड़– पुरातन से..... [9]

'प्रेमचन्द का समय भारत की संघर्षरत जनचेतना की अभिव्यक्ति का काल है। राजनीतिक स्तर पर स्वाधीनता के लिए जो संघर्ष चल रहा था, उसमें जनता का स्वर भी सम्मिलित था। यह युग व्यक्ति के समाजीकरण का युग है, इसमें प्रगति और जड़ता के मध्य संघर्ष है। यह युग चेतना के नवीन रूपों के विस्फोट का युग है।'

अमृतराय ने एक अच्छे जीवनीकार की तरह अपने चरित्र –नायक की जिन्दगी को आन्तरिक सहानुभूति से बड़ी गहराई से देखा–परखा है और दूर तक तटस्थ दृष्टा की भूमिका का निर्वाह कर ईमानदारी का परिचय भी दिया है।

संदर्भ ग्रर्थ

1. अमृतरायः प्रेमचंद – कलम का सिपाही : भूमिका पृष्ठ 10–11

2. डॉ. भगवत शरण भारद्वाज : हिन्दी जीवनी साहित्य : सिद्धान्त और अध्ययन पृष्ठ 29
3. अमृतरायः प्रेमचंद – कलम का सिपाही : पृष्ठ 02
4. शिव प्रसाद सिंह : सम्पादक डॉ. देवीशंकर अवस्थी :– विवेक के रंग पृष्ठ–413
5. अमृतरायः प्रेमचंद – कलम का सिपाही : पृष्ठ 54
6. अमृतरायः प्रेमचंद – कलम का सिपाही : पृष्ठ 49
7. अमृतरायः प्रेमचंद – कलम का सिपाही : पृष्ठ 63
8. अमृतरायः प्रेमचंद – कलम का सिपाही : पृष्ठ 501
9. अमृतरायः प्रेमचंद – कलम का सिपाही : पृष्ठ 527